प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा की उपादेयता

सुमित गंगवार*
सरिता चौधरी**
मोहिता वर्मा***

संस्कृति एक समाज या समुदाय की जीवनशैली, परंपराएँ, विश्वास, कला, भाषा, रीति-रिवाज और नैतिक मूल्यों का समुच्चय होती है, जो समय के साथ विकसित होती रहती है। जिसे हम समाज के सदस्य के रूप में उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त करके अपनी अगली पीढ़ी को स्थानांतरित कर देते हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम से संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरण आसानी से किया जा सकता है। अतः विद्यालय में सांस्कृतिक भागीदारी को सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक विविधता बढ़ने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी विविध पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है। अतः ऐसी परिस्थिति में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की संस्कृति का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिसे बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। इस शोध-लेख के अध्ययन उपरांत प्राथमिक स्तर के अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा की संकल्पना, ऐतिहासिक विकास, घटक तथा विद्यालयी अधिगम पारिस्थितिकी में इसकी उपादेयता से परिचित होकर कक्षागत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सांस्कृतिक रूप से और अधिक समावेशी बनाकर विद्यार्थियों को विविध संस्कृति के प्रति सकारात्मक योगदान देने संबंधी ज्ञान, क्षमता, मूल्य और स्वभाव प्राप्त करने में सक्षम बना सकेंगे।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही भारत को विभिन्नताओं की जन्मस्थली माना जाता है, जिसका कारण यहाँ निवास करने वाली असंख्य तथा विविध जनसंख्या द्वारा अपनाई गई सभ्यता, संस्कार तथा जीवनशैली है। आधुनिक तथा उन्नत समाज में विद्यार्थी अपनी विविध रुचियों के बारे में जानने में सक्षम हैं तथा स्वयं की रुचि के अनुरूप देश-विदेश के प्रतिष्ठित

**सहायक आचार्य*, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
***सहायक आचार्या*, शिक्षा मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016
***पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

संस्थानों में अध्ययन हेतु जाने लगे हैं, परिणामस्वरूप शिक्षण संस्थाओं में विविध जाति, समुदाय, भाषा तथा संस्कृति के विद्यार्थियों के मिश्रित समूह निर्मित हो जाते हैं। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का निर्माण करना है, जिसमें बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक आधुनिक तथा विकसित शैक्षिक मॉडल है, जिसमें सभी विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि, समुदायों, जातियों तथा विश्वासों को केंद्र में रखकर अध्यापन किया जाता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक नवाचारी सुधार आंदोलन है, जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी की संस्कृति, जातीयता, भाषिकता तथा वर्ग का सम्मान करना है (फ़ित्राया, 2023)। बहुसांस्कृतिक शिक्षा-शिक्षण प्रक्रिया का एक अंग है जो विविध पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को सर्वाधिक सफल होने की प्रक्रिया में आधार प्रदान करती है। (गंगवार तथा यादव, 2023)। यह शिक्षा न केवल विविध संस्कृतियों को स्वीकार करती है, बल्कि उनके सम्मान एवं समावेशन को भी बढ़ावा देती है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा विविध प्रजाति, नृजाति, धर्म, सामाजिक वर्ग एवं सांस्कृतिक समूहों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए समान शैक्षिक अवसरों का निर्माण करने के मुख्य उद्देश्य वाला उदीयमान विषय तथा अध्ययन क्षेत्र है (चौधरी, 2023)।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक विचार, शैक्षिक सुधार आंदोलन तथा ऐसी प्रक्रिया है, जिसका प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक संस्थानों को इस प्रकार परिवर्तित करना है जिसमें सामान्य एवं विशिष्ट, महिला एवं पुरुष तथा विभिन्न नस्लीय, जातीय, भाषिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक समूहों के विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर मिल सकें (बैंक्स, 2014)। शैक्षिक सुधार आंदोलन के रूप में इसका मानना है कि सभी शैक्षिक संस्थानों को विविध पृष्ठभूमि एवं आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए तैयार रखना है, जिससे कोई भी विद्यार्थी किसी भी अभाववश शैक्षिक अवसरों से वंचित न रहे। विचार के रूप में यह विद्यार्थी के सामाजिक वर्ग, जातीय, सांस्कृतिक विशेषताओं, लिंग, शारीरिक संरचना तथा यौन रुझानों के बावजूद सीखने के समान अवसर प्रदान करना है। एक प्रक्रिया के रूप में यह संपूर्ण शैक्षिक वातावरण में परिवर्तन की माँग करती है, जिसका लक्ष्य शैक्षिक संस्थान को एक बहुसांस्कृतिक वातावरण में बदलने का प्रयास करना है (बैंक्स तथा बैंक्स, 2016)।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

बहुसांस्कृतिक शिक्षा की संकल्पना 1960 के दशक में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में हुए नागरिक अधिकार आंदोलन के दौरान संज्ञान में आई, जब वहाँ के अफ्रीकी-अमेरिकी नागरिकों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना आरंभ किया। 1960 के दशक में अफ्रीकी-अमेरिकी नागरिक, अमेरिका में नस्लभेद का सामना कर रहे थे। सभी प्रकार के सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थानों में रंगभेद एक प्रमुख समस्या थी तथा पाठ्यचर्या तथा शिक्षा भी इससे मुक्त नहीं थी। आंदोलनकारियों ने पाठ्यचर्या तथा शिक्षा में समाज के विभिन्न समुदायों की संस्कृतियों व इतिहास के सम्मान एवं उनकी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने हेतु वांछनीय सुधार की माँग की। जिसके

फलस्वरूप शिक्षा तथा पाठ्यचर्या में शैक्षिक संस्थानों द्वारा वांछनीय संशोधन किए गए तथा विद्यालयों में विविध नस्लों के अध्यापकों तथा प्रशासकों की नियुक्ति की गई, जिससे अफ्रीकी-अमेरिकी विद्यार्थियों को आदर्श रोल मॉडल मिल सके। इसी प्रकार 1960 तथा 1970 के दशक में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में महिलाएँ विभिन्न सामाजिक तथा शैक्षिक पक्षपात का सामना कर रही थीं, जिसका प्रमुख कारण लैंगिक पूर्वाग्रह थे। इसी प्रकार एल.जी.बी.टी. वरिष्ठ नागरिक एवं दिव्यांगजन अधिकार जैसे आंदोलनों ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा के उद्भव में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया (नेटो, 2016)।

बाला, 2024 के अनुसार भारत में बहुसांस्कृतिक शिक्षा का उद्भव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा है, जहाँ सर्वप्रथम धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की परिकल्पना की गई थी। भविष्य में जब स्वतंत्र राष्ट्र भारत में संविधान का निर्माण किया गया तो उसमें भी भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार एवं स्वतंत्रता प्रदान की गई जो बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम थी।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा के घटक

घिमिरे, 2020 ने अपने शोधकार्य 'मल्टीकल्चरल एजुकेशन— कंपोनेंट्स एंड नेसेसिटिस' में जेंक्स, ली तथा कंपोल, 2001 द्वारा वर्गीकृत तीन प्रकार की बहुसंस्कृति की संरचना का वर्णन किया है, जिसमें पहली कनजरवेटिव अर्थात रूढ़िवादी बहुसंस्कृति, दूसरी लिबरल अर्थात उदारवादी बहुसंस्कृति तथा तीसरी क्रिटिकल अर्थात आलोचनात्मक बहुसंस्कृति है। रूढ़िवादी बहुसंस्कृति में सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक मानकों के आधार पर समावेशित करने का विचार प्रस्तुत किया गया। रूढ़िवादी बहुसंस्कृति के अनुसार सांस्कृतिक अंतरों की विद्यार्थी की सफलता में कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए तथा तुलनात्मक सफलता मापने के तरीकों एवं समावेशन संबंधी अवधारणाओं का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी में सशक्तीकरण की भावना का विकास हो सके। उदारवादी बहुसंस्कृति में प्रत्येक विद्यार्थी की वैयक्तिक विभिन्नताओं को स्वीकार करके उनकी सराहना एवं सजह स्वीकृति पर बल दिया जाता है। आलोचनात्मक बहुसंस्कृति के अनुसार ज्ञान को सदैव निष्पक्ष नहीं कहा जाना चाहिए, क्योंकि यह शिक्षण संस्थाओं में शक्ति एवं सामाजिक वर्गीकरण को बढ़ावा देता है। यह योग्यता आधारित व्यवस्था को चुनौती देते हुए, पिछड़े व निचले वर्गों के इतिहास तथा संघर्षों को पाठ्यचर्या में शामिल करने की बात करता है। पैनी और अन्य (2000) ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लिए नौ सिद्धांतों को विकसित किया जिसमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता, प्रभावी संवाद, पाठ्यक्रम में समावेशन, आलोचनात्मक सोच, सांस्कृतिक समझ तथा सामुदायिक लाभ प्रमुख है। घिमिरे (2020) ने इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर बहुसांस्कृतिक शिक्षा के 6 प्रमुख घटकों यथा सांस्कृतिक प्रासंगिकता, सांस्कृतिक जागरूकता, समान अवसरों की पहुँच, सांस्कृतिक रूप से सहायक वातावरण, शिक्षण में लचीलापन तथा शिक्षण में एकीकरण को प्रस्तावित किया है। सांस्कृतिक प्रासंगिकता घटक के अंतर्गत शिक्षण संस्थानों द्वारा उपयोग की जानी वाली शिक्षण सामग्री एवं पद्धतियों को विद्यार्थी के सांस्कृतिक

संदर्भों के प्रति सजग होना है। यदि विद्यार्थी शिक्षण सामग्री तथा पद्धति के प्रति जुड़ाव को महसूस कर सकते हैं, तो उनमें शिक्षा के प्रति रुचि का निर्माण होता है। सांस्कृतिक जागरूकता संबंधी घटक विद्यार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रति जागरूक होकर उनके व्यवहार, मान्यताओं और अध्ययन शैली को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने में उपयोगी सिद्ध होते हैं। समान अवसरों की पहुँच का तात्पर्य प्रत्येक विद्यार्थी तक सभी शैक्षिक अवसरों एवं संसाधनों की बिना किसी भेदभावपूर्ण समान पहुँच सुनिश्चित करना है। सांस्कृतिक रूप से सहायक वातावरण संबंधी घटक, एक ऐसे शिक्षण अधिगम वातावरण के निर्माण पर बल देता है; जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक पहचान एवं धरोहर को व्यक्त करने में स्वतंत्रता का अनुभव करें तथा उसके द्वारा व्यक्त किए अनुभवों को सम्मान मिले। शिक्षण में लचीलापन इस बात की ओर इंगित करता है कि सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही शैली उपयुक्त नहीं हो सकती है, इसलिए अध्यापकों एवं प्रशासकों द्वारा विविध शिक्षण विधियों, सामग्रियों व तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए। शिक्षण में एकीकरण, विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोणों एवं प्रथाओं को पाठ्यचर्या में एकीकरण पर बल देता है, जिससे विद्यार्थी एक व्यापक तथा समग्र वैश्विक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

बैंक्स तथा बैंक्स, 2016 ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा के 5 प्रमुख घटकों यथा-सामग्री एकीकरण (कॉन्टेंट इंटीग्रेशन), समता पूर्ण शिक्षण पद्धति (इक्विटी पेडागॉजी), ज्ञान निर्माण (नॉलेज कंस्ट्रक्शन), विद्यालयी संस्कृति को बढ़ावा देना (एम्पॉवेरिंग स्कूल कल्चर) एवं पूर्वाग्रह सकुंचन (प्रेज्यूडिस रिडक्शन) का वर्णन किया गया है। सामग्री एकीकरण का अर्थ विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों से परिचित करवाना है। इसके लिए प्रत्येक विषय में समानतापूर्ण शिक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे विभिन्न सांस्कृतिक, सामुदायिक, सामाजिक, आर्थिक एवं लिंग के विद्यार्थियों के शैक्षिक संस्थानों को बढ़ावा मिल सके। ज्ञान निर्माण का तात्पर्य है कि विद्यार्थी किस पद्धति द्वारा ज्ञान का निर्माण करते हैं तथा उसके दृष्टिकोण, पूर्वाग्रह एवं सांस्कृतिक धारणाएँ ज्ञान के निर्माण को सकारात्मक अथवा नकरात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। पूर्वाग्रह सकुंचन का तात्पर्य है कि शिक्षा से जुड़े विभिन्न हितधारक समस्त संस्कृतियों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करें तथा विभिन्न समुदायों एवं जातियों की सकारात्मक छवियों तथा बहुसांस्कृतिक सामग्री का सुसंगत, अर्थपूर्ण व क्रमबद्ध तरीके से उपयोग करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 एवं बहुसांस्कृतिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग III में अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दों का वर्णन है जिसके अध्याय 22 में भारतीय भाषाओं, कला एवं संस्कृति के संवर्धन संबंधी प्रावधानों का वर्णन है। बिंदु 22.1 के अनुसार भारत में अत्यंत समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों यथा हस्तशिल्प, प्राचीन साहित्य, ध्यान व योग की उपलब्धता रही है, जिसके कारण वैश्विक स्तर पर लोग इसका आनंद लेते हैं तथा सराहना करते हैं। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार होना चाहिए,

जिससे विद्यार्थी एक दूसरे की संस्कृतियों से परिचित हो सकेंगे तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे (बिंदु 22.2)। बिंदु 22.4 के अनुसार किसी व्यक्ति की संस्कृति उसकी भाषा में निहित होती है तथा बिना भाषायी संवर्धन के संस्कृति का प्रसार असंभव है। बिंदु 22.6 के अनुसार विभिन्न भारतीय भाषाएँ लुप्त होने की कगार पर हैं तथा इनके संरक्षण हेतु विभिन्न भाषाओं में प्रिंट सामग्री एवं अधिगम सामग्री का सतत प्रवाह बना रहना चाहिए, जिससे ये लुप्तप्राय भाषाएँ जीवंत एवं प्रासंगिक बनी रहें। बिंदु 22.8 व 22.9 के अनुसार त्रिभाषा फॉर्मूले का त्वरित निष्पादन, स्थानीय हस्त-शिल्प के प्रोत्साहन, स्थानीय कलाकारों को विद्यालय से जोड़ना तथा पारंपरिक भारतीय ज्ञान के पाठ्यचर्या में समावेशन द्वारा बहुसांस्कृतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अध्यापकों को भारत की विविध तथा समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का ज्ञान होना चाहिए (बिंदु 22.12)। विभिन्न सांस्कृतिक शास्त्रीय भाषाओं एवं साहित्य के अध्ययन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे इन भाषाओं से संबंधित कला, संस्कृति एवं साहित्य को संरक्षण प्राप्त हो (बिंदु 22.17)।

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 एवं बहुसांस्कृतिक शिक्षा

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में विभिन्न सांस्कृतिक, भाषिक एवं कलात्मक तत्वों का बच्चे के विकास में योगदान का वर्णन किया गया है। अध्याय 1 के खंड 1.3 के अनुभाग 1.3.1 के बिंदु 'टी' में भारत के समृद्ध, विविध, प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों तथा सांस्कृतिक परंपराओं पर गर्व करने एवं इसको समृद्ध करने का वर्णन है। खंड 3.2 के बिंदु 'ए' में विद्यालयों में स्थानीय सामुदायिक अध्यापकों की नियुक्ति का सुझाव है, जो स्थानीय भाषा, संस्कृति और परंपराओं को समझते हों, जिससे वे विद्यार्थी तथा विद्यालय के मध्य एक घनिष्ठ संबंध का निर्माण कर पाएँ। खंड 4.5 के अनुभाग 4.5.2 में बताया गया है कि बच्चे अपने संस्कृति एवं आस-पास से विभिन्न प्रकार की गणितीय कौशल लेकर कक्षा में प्रवेश करते हैं, जिसका उपयोग अध्यापक द्वारा उन्हें गणित सिखाने के लिए करना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 एवं बहुसांस्कृतिक शिक्षा

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विद्यालयी शिक्षा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के अध्याय 1 के खंड 1.3 के अनुभाग 'बी' के बिंदु 'आई' में बताया गया है कि कला शिक्षा विभिन्न प्राचीन भारतीय ग्रंथों, यथा— अभिनय दर्पण, चित्रसूत्र, शिल्पशास्त्र, संगीत रत्नाकर आदि से प्रेरित है। विद्यार्थी कला शिक्षण द्वारा भारतीय कलात्मक परंपरा की विविधता एवं बहुसांस्कृतिक भावना को समझ सकते हैं। खंड 2.6 के अनुभाग 2.6.1 के भाग 2.6.1.1 के बिंदु 2.6.1.1.3 के बिंदु 'बी' में पठन कौशल के विकास का वर्णन है, जिसके बिंदु III के अनुसार शैक्षिक संस्थानों के पुस्तकालयों में बहुसांस्कृतिक ग्रंथों की उपलब्धता होना अति आवश्यक है, जिससे विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों से परिचित हो सकें एवं कक्षा

में अन्य विद्यार्थियों के साथ परस्पर बहुसांस्कृतिक विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। खंड 6.1 के बिंदु 'ई' के अनुसार विद्यार्थी कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपनी परंपराओं एवं संस्कृति से जुड़ाव महसूस कर सकते हैं, जिससे विविध सांस्कृतिक विचारों व धरोहरों को सम्मान मिल सकेगा।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण अवधारणा बन चुकी है। अतः इस संदर्भ में प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए, बहुसांस्कृतिक शिक्षा की उपादेयता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे न केवल बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व विकास और सामाजिक समरसता की नींव रखते हैं, बल्कि उन्हें एक समावेशी और बहुसांस्कृतिक समाज के अनुकूल बनने के लिए प्रेरित भी करते हैं। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा की उपादेयता को निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

भाषायी व सांस्कृतिक विविधता को समझने मे सहायक

प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र विकास की नींव रखती है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी विभिन्न भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, जिससे उनकी सीखने की शैली, अभिव्यक्ति के तरीके और सामाजिक व्यवहार में विविधता देखने को मिलती है। अतः अध्यापक को विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करने और उनके शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध बनाने के लिए उनकी भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति संवेदनशील और जागरूक होना अत्यंत आवश्यक होता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों के लिए भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को समझने में एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करती है। जब अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा को अपनाते हैं, तो वे विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि को सम्मान देते हुए उनके सीखने की प्रक्रिया को अधिक समावेशी बना सकते हैं। इसके लिए अध्यापक अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों को अपनी भाषा में स्वयं के विचारों को साझा करने, एक-दूसरे से विचार-विमर्श करने जैसे अभ्यासों को लागू कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भाषायी व सांस्कृतिक विविधता को समझने के लिए बहुभाषिकता व बहुसांस्कृतिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया है। बहुभाषिकता व्यक्तिगत स्तर पर सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ावा देती है (एन.सी.एफ.-एस.ई., 2023)। अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रणाली में विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं को एकीकृत करके प्राथमिक अध्यापकों के लिए भाषायी व सांस्कृतिक विविधता को समझने में सहायक होती है।

समावेशी शैक्षिक परिवेश के निर्माण में सहायक

प्राथमिक स्तर पर ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ते हुए सभी विद्यार्थियों को जाति, धर्म संबंधी अंतर, लिंग और असमर्थता संबंधी चुनौतियों से निरपेक्ष रहते हुए समावेशी विद्यालयी माहौल मुहैया कराने पर बल दिया गया है, जिससे उन्हें शिक्षा ग्रहण करने और सशक्त बनाने में मदद मिलती है

(एन.सी.एफ., 2005)। इस कार्य हेतु बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों के लिए समावेशी शैक्षिक परिवेश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब अध्यापक बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण अपनाते हैं; तो वे शिक्षण पद्धतियों में विविध सांस्कृतिक संदर्भों को शामिल कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपनी पहचान को बनाए रखते हुए, दूसरों की संस्कृति को समझने और स्वीकारने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्यापकों को भेदभाव रहित कक्षागत वातावरण बनाने में मदद करती है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी की भाषा, रीति-रिवाज और परंपराओं को सम्मानपूर्वक स्थान दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है, उनकी सीखने की रुचि बढ़ती है और वे अपने सहपाठियों के साथ अधिक सहयोगात्मक एवं संवेदनशील संबंध स्थापित कर पाते हैं। इसके लिए अध्यापक विभिन्न परिवेशों से आने वाले विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को स्वीकारने संबंधी क्रियाकलापों का सहारा ले सकते हैं।

समावेशी पाठ्यचर्या के निर्माण व नवीन शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों को अपनाने में सहायक

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों को विद्यार्थियों की विभिन्न भाषायी, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखते हुए एक संतुलित और समावेशी शिक्षण अनुभव प्रदान करना आवश्यक होता है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों द्वारा पाठ्यचर्या को इस प्रकार से विकसित करने की आवश्यकता है कि उसमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, परंपराओं और जीवन मूल्यों का समावेश हो। इससे विद्यार्थियों को विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को समझने और स्वीकार करने का अवसर मिलता है, जिससे वे अधिक सहिष्णु और संवेदनशील बनते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र को एक मजबूत भारतीय और स्थानीय संदर्भ देने की बात की गई है। इसके अंतर्गत संस्कृति, परंपराएँ, विरासत, रीति-रिवाज, भाषा, दर्शन आदि विभिन्न पक्षों को सम्मिलित करने पर बल दिया गया है (एन.ई.पी., 2020, अध्याय 4, पृ.सं. 25)। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों की विविधतापूर्ण संस्कृति को एकीकृत करने में सहायता मिलती है। अतः अध्यापक बहुसांस्कृतिक शैक्षिक दृष्टिकोण को अपनाकर एक ऐसी पाठ्यचर्या का निर्माण कर सकते हैं, जिसमें विविध सांस्कृतिक परिवेश से आने वाले विद्यार्थियों की भाषाओं, संस्कृतियों तथा मूल्यों को महत्व प्रदान किया गया हो तथा जिससे विद्यार्थी स्वयं को कक्षा-कक्ष में आसानी से समायोजित कर सकें।

हम यह जानते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी विविधतापूर्ण भाषायी तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण अपने आप में विशिष्ट होता है। अतः बालक की अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखने तथा उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप अध्यापकों द्वारा नवीन शिक्षण पद्धतियों को अपनाना आवश्यक हो जाता है। यह अध्यापकों को संवादात्मक, अनुभवात्मक और तकनीक-समर्थित विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जैसे— बहुभाषीय शिक्षण, समूह-आधारित गतिविधियाँ, सांस्कृतिक दृष्टांत और परियोजना-आधारित शिक्षण। प्राथमिक स्तर पर अध्यापक बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण अपनाकर

खेल आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं, क्योंकि इस आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए यह खासतौर पर महत्वपूर्ण है। इस प्रकार की शिक्षा में विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े खेलों यथा अंत्याक्षरी, परंपरागत गीतों की शृंखला, खेल, अष्टपाद, सांस्कृतिक समयरेखा (कल्चरल टाइमलाइन) इत्यादि खेलों का आयोजन किया जा सकता है। विद्यालय के मध्य अवकाश में विद्यार्थियों को तरह-तरह के पारंपरिक खेलों में संलग्न करना, उन्हें प्रोत्साहित करना कि वे अपने घर व मोहल्ले में खेले जाने वाले सामूहिक खेल एक-दूसरे को सिखाएँ— यह सब बहुसांस्कृतिक शिक्षा के उदाहरण है। इन खेलों में कहाँ-कहाँ सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्य झलक रहे हैं, ऐसा वार्तालाप बहुसांस्कृतिक शिक्षा का आधार बनता है। खेल आधारित शिक्षा, बच्चों की जन्मजात क्षमताओं और जिज्ञासा, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग, समूह कार्य, सामाजिक अंतर्क्रिया, सहानुभूति, करुणा, समावेशिता, संप्रेषण, संस्कृति की सराहना, हँसी-खेल की भावना, आस-पास के वातावरण के प्रति जागरूकता, साथ-ही-साथ अध्यापकों, अपने साथियों व अन्य के साथ सफलतापूर्वक एवं सम्मानपूर्वक बातचीत करने की योग्यता को भी पोषित करते हैं (एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022)। इसके अतिरिक्त अध्यापक बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण को अपनाकर विभिन्न क्रॉस-करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिसमें विविध विषयों की अवधारणाओं के अधिगम आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों का उपयोग किया जाता है (एन.ई.पी., 2020)।

अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु मार्गदर्शन में सहायता

शिक्षा, सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एकमात्र और सबसे प्रभावी साधन है। समतामूलक और समावेशी शिक्षा न सिर्फ स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है, बल्कि समतामूलक और समावेशी समाज निर्माण के लिए भी अनिवार्य कदम है। जिसमें प्रत्येक नागरिक को सपने संजोने, विकास करने और राष्ट्र हित में योगदान करने के अवसर उपलब्ध होते हैं (एन.ई.पी., 2020, अध्याय 6, पृ.सं. 38)। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अध्यापकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। अध्यापकों को प्रशिक्षित करना एक ऐसी प्रक्रिया है; जिसके लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता के साथ ही साथ, बेहतरीन मेंटर के निर्देशन में मान्यताओं और मूल्यों के निर्माण के साथ-साथ उनके अभ्यास की भी आवश्यकता होती है। अतः अध्यापकों को प्रशिक्षित करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अध्यापक शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित अद्यतन प्रगति के साथ-साथ भारतीय मूल्यों, भाषाओं, ज्ञान, लोकाचार और जनजातीय परंपराओं के प्रति भी जागरूक रहें (एन.ई.पी., 2020, अध्याय 6, पृ.सं. 67)। इस कार्य हेतु अध्यापकों का मार्गदर्शन करने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दृष्टिकोण अध्यापकों को विविध सांस्कृतिक, भाषायी और सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को समझने और उनके अनुरूप प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता करती है। इसके अतिरिक्त

यह दृष्टिकोण अध्यापकों को सहानुभूतिपूर्ण और संवेदनशील शिक्षण शैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए अनुकूलित पाठ्यक्रम विकसित कर सकते हैं। इस प्रकार बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापक प्रशिक्षण को अधिक व्यावहारिक एवं लचीला बनाती है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी और शिक्षार्थी-केंद्रित बनती है।

आलोचनात्मक चिंतन के विकास में सहायक

बहुसांस्कृतिक शिक्षा केवल विविध संस्कृतियों को स्वीकारने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अध्यापकों में आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अध्यापकों को न केवल अपनी शिक्षण शैली में सुधार करने के लिए प्रेरित करती है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मुद्दों पर भी गहराई से चिंतन-मनन करने के लिए प्रेरित करती है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से अध्यापकों को विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण कर स्वयं तथा दूसरों की पूर्वधारणाओं व रूढ़िवादी सोच को पहचानने में मदद मिलती है। यह उन्हें अपने दृष्टिकोण की आलोचनात्मक समीक्षा करने और नए दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। जब अध्यापक विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और जीवनशैलियों का अध्ययन करते हैं, तो वे एक ही विषय या घटना को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने में सक्षम होते हैं। बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों को समाज में मौजूद सामाजिक असमानता, भेदभाव, नस्लवाद और लिंग भेद जैसी जटिल समस्याओं को समझने और उनका विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करती है। वे इन मुद्दों को कक्षा में चर्चा के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं, जो विद्यार्थियों में भी आलोचनात्मक चिंतन के विकास में सहायक हो सकती है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों को संवाद और विमर्श को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करती है। जब वे विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े सरोकारों पर चर्चा करते हैं, तो उनकी तर्कशक्ति और साक्ष्य-आधारित सोच विकसित होती है। इस प्रकार यह अध्यापकों में बहुपरिप्रेक्ष्यीय सोच को प्रोत्साहित करता है, जो आलोचनात्मक चिंतन का एक प्रमुख पहलू है। इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक चिंतन का एक प्रमुख पहलू समस्या-समाधान की क्षमता भी है। जब अध्यापक बहुसांस्कृतिक शैक्षिक सिद्धांतों को अपनाते हैं, तो वे सामाजिक और शैक्षिक चुनौतियों के रचनात्मक समाधान खोजने में भी अधिक सक्षम होते हैं।

नवाचार को प्रोत्साहित करने में सहायक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने पर बल देती है (एन.ई.पी., 2020, अध्याय 4, पृ.सं. 19)। जिससे अध्यापकों को विभिन्न भाषाओं में शिक्षण सामग्री तैयार करने तथा नवीन शिक्षण प्रविधियों को अपनाने का अवसर मिलता है। इस शिक्षा नीति में अध्यापकों को उनके व्यावसायिक विकास के लिए प्रत्येक वर्ष 50 घंटे के सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम में सहभागिता करने की संस्तुति की गई है। इसके अतिरिक्त इस शिक्षा नीति में शिक्षार्थियों की प्रगति की निगरानी के लिए अध्यापकों को सहायक उपकरण के एक संरचित, उपयोगकर्ता अनुकूल, विकसित सेट प्रदान करने के लिए 'स्वयं' और 'दीक्षा' जैसे उपयुक्त ई-अधिगम प्लेटफ़ॉर्म के

विस्तार पर बल दिया गया है। सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, स्वयं तथा दीक्षा जैसे ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से बहुसांस्कृतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे अध्यापक विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े संसाधनों का उपयोग कर अपनी शिक्षण अभ्यासों में नवाचार कर सकते हैं। इस प्रकार बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों को नवाचार के लिए प्रेरित करती है। जिससे अध्यापक नई शिक्षण रणनीतियाँ अपनाकर शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और व्यावहारिक बना सकते हैं, साथ ही यह सांस्कृतिक विविधता को अपनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

विद्यालय में सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने में सहायक

विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए विद्यालय में अभिभावक और समुदाय की भागीदारी आवश्यक है। इस क्रिया में अभिभावकों और समुदाय को व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। जिसमें अभिविन्यास बैठकें, नियमित अभिभावक-अध्यापक बैठकें और नवीन परिप्रेक्ष्य निर्मिति हेतु निरंतर संवाद शामिल हैं। माता-पिता और समुदाय के सदस्य संसाधन व्यक्तियों के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। स्कूल प्रबंधन समितियाँ (एस.एम.सी.) औपचारिक संरचनाएँ हैं और इन्हें जीवंत भूमिका निभाने के लिए पोषित किया जाना चाहिए (एन.सी.एफ.-एस.ई., 2023)। विद्यालय में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक को समुदाय की संस्कृति को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है जिसे बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। विद्यार्थी कक्षा में घर के अनेक अनुभव लेकर आते हैं, उन्हें घर के बड़ों द्वारा गाए जाने वाले पारंपरिक गीत भी याद होते हैं। इन पारंपरिक गीतों को कक्षा में स्थान देना, उनमें निहित अर्थ खोजना और उस पर चर्चा करना तथा गीतों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता चिह्नित करना, ये बहुसांस्कृतिक शिक्षा के सबल पक्ष हैं।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों को विद्यालय में सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करती है। अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच परस्पर सम्मान, सहयोग और समावेश की भावना विकसित कर सकते हैं। जब अध्यापक विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े उदाहरण, कहानियाँ और परंपराएँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शामिल करते हैं, तो इससे विद्यार्थियों के बीच संवाद और आपसी समझ का विकास होता है। इससे विद्यालय में एक ऐसा वातावरण बनता है, जो समरसता और विविधता को प्रोत्साहित करता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा अध्यापकों को अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने में भी सहायक होती है। वे विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आए हुए विद्यार्थियों के अभिभावकों से संवाद करके उनकी परंपराओं और मूल्यों को समझ सकते हैं, जिससे विद्यालय में सहभागिता और समन्वय को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्राथमिक अध्यापकों के लिए केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं, बल्कि एक समावेशी और संवेदनशील शैक्षिक दृष्टिकोण है, जो विविध

सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने और उनके समग्र विकास में सहायक होती है। इससे अध्यापकों को न केवल भाषायी तथा सांस्कृतिक विविधता को समझने में मदद मिलती है, बल्कि समावेशी शैक्षिक परिवेश और नवाचारी शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए भी प्रेरित करती है। बहुसांस्कृतिक शैक्षिक दृष्टिकोण से अध्यापकों में आलोचनात्मक चिंतन विकसित होता है, जिससे वे शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असमानताओं को दूर करके इसे अधिक समावेशी एवं संवेदनशील समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त अध्यापक इसे अपनाकर विद्यालय और समुदाय के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। अतः प्राथमिक अध्यापकों के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा की उपादेयता केवल शैक्षिक सीमाओं तक ही सीमित न होकर एक व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण को भी विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है, जो विद्यार्थियों को एक समावेशी, संवेदनशील और बहुसांस्कृतिक समाज के निर्माण हेतु प्रेरित करती है।

संदर्भ

गंगवार, एस. और यादव, एस. 2023. सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 4(43), पृ.सं. 60–72.

घिमिरे, टी.आर. 2020. मल्टीकल्चरल एजुकेशन— कम्पोनेंट्स एंड नेसेसिटिस. *के.एम.सी. रिसर्च जर्नल्स*. 4(4), पृ.सं. 172–190.

चौधरी, एन.के. 2023. बहुसांस्कृतिक शिक्षा— उभरते वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकता. *एजुकेशनल मेटामॉर्फ़ोसिस*. 2(1), पृ.सं. 7–11.

जेंक्स, सी., जे. ली और बी. कंपोल. 2001. अप्रोचेज टू मल्टीकल्चरल एजुकेशन : इन प्री-सर्विस टीचर एजुकेशन : फिलॉसॉफिकल फ्रेमवर्क्स एंड मॉडल्स फॉर टीचिंग. द *अर्बन रिव्यू*. 33(2), पृ.सं. 87–105.

नेटो, एस. 2017. रि-ईमेजिनिंग मल्टीकल्चरल एजुकेशन : न्यू विशंस, न्यू पॉसिबिलिटीज. *मल्टीकल्चरल एजुकेशन रिव्यु*. 9(1), पृ.सं. 1–10.

फ़ित्राया, टी.एन. 2023. इम्प्लीमेंटेशन, चेलैंज एंड सोलूशंस ऑफ मल्टीकल्चरल एजुकेशन इन स्कूल. *प्राइमेसी जर्नल ऑफ इंग्लिश एजुकेशन एंड लिटरेसी*. 2(2), पृ.सं. 85–106.

बाला, एस. 2024. फोस्टरिंग मल्टीकल्चरल एजुकेशन इन इंडिया— प्रॉस्पेक्ट्स अंडर एन.ई.पी. 2020. *जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिव्यु*. 1 (1), पृ.सं. 42–46. जगन्नाथ यूनिवर्सिटी.

बैंक्स, जे.ए. 2014. *एन इंट्रोडक्शन टू मल्टीकल्चरल एजुकेशन (फिफ्थ एडिशन)*. पियर्सन एजुकेशन आइंसी. न्यूजर्सी.

——— और सी.ए.एम. बैंक्स. 2016. *मल्टीकल्चरल एजुकेशन इश्यूज एंड पर्सपेक्टिव (नाइंथ एडीशन)*. विले, यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज. 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.